Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):123-124: 2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

अमरकांत की कहानियों में राजनैतिक संवेदना : एक अनुशीलन

मनोज सिंह[1]
[1]शोध छात्र, हिन्दी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय ,ग्वालियर, म0प्र0,भारत

ABSTRACT

' अमरकांत ने जब हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रवेश किया तो वह कहानी में एक नए उन्मेष का काल था और आगे चलकर, लेखकों और आलोचकों की एकत्र सहमति से, इसे ही 'नयी कहानी' की संज्ञा दी गई।' अमरकांत ने हिन्दी कहानी को चितंन का एक नया आयाम दिया, उन्होने व्यवस्था को सही राह पर लाने के लिए शासन तंत्र पर खुल कर लिखा। उनकी कहानियों में राजनैतिक विसंगतियों, शोषण एवं आम आदमी की संघर्षशीलता के साथ ही साथ समाजवाद का स्वर लोकतंत्रीय आस्था के साथ महसूस किया जा सकता है। अमरकांत की कहानियों का फलक बहुत ही व्यापक है, वे सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संवेदना को अपनी कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान देते है। वे एक ऐसे कहानीकार है जो समाज में व्याप्त समस्याओं की धुरी को राजनैतिक विसंगतियों से जोड़कर देखने का साहस दिखाते है और अपनी कहानियो में उसका मुखरित रूप से वर्णन करते है। इस रूप में अमरकांत निश्चित ही 'नई कहानी' में 'नई परम्परा' के सूत्रधार है।

***KEYWORDS:** नई कहानी, आलोचना, अमरकांत,*

अमरकांत की कहानियाँ समाज के सापेक्ष अपना अर्थगाम्भीर्य प्रकट करती हुई आगे बढ़ती है। अमरकांत की प्रजातंत्र में पूरी आस्था है यही कारण है कि वे राजनैतिक विद्रूपता पर तो प्रहार करते है, परन्तु लोकतंत्र की विफलता पर कही भी सवालिया निशान नही लगाते। यह बात और है कि वे समाजवाद की बात अपनी कहानियों में अवश्य करते है परन्तु वह समाजवाद भारतीयता के रंग मे रंगा हुआ समाजवाद का नया कलेवर है, उसे मार्क्सवाद से जोड़ना कहानीकार की आस्था को चोट पहुँचाना होगा। उनकी कहानियों में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सत्य–अहिंसा की भी पुरजोर समर्थन के स्वर सुनाई देते है, भारत की संस्कृति एवं सभ्यता की सोधी महक उनके सम्पूर्ण कथा–साहित्य में बिखरी पड़ी है। अमरकांत की राजनैतिक संवेदना हमारे समाज में व्याप्त शासन व्यवस्था से लेकर आम आदमी के आत्म संघर्ष तक की राजनैतिक विद्रूपता को बहुत ही मार्मिक ढंग से उजागर करती है। अमरकांत की कहानियो में समाजवाद का स्वर सामाजिक समरसता, समानता एवं एक साम्यवादी समाज की संकल्पना को अभिव्यक्त करती है। अमरकांत ने बहुत ही सहज ढ़ग से समाज की राजनैतिक समस्याओं को अपनी कहानियों में उकेरा है। उन्होने अपनी कहानी कला के विषय में लिखा था, ''जब कहानी के दो पेज बने तो राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ दिमाग पर प्रभाव डाल रहा था। थियोरी और प्रैक्टिस की एकता के बारे में लेनिन के विचारों का प्रभाव भी इस रचना प्रक्रिया में कारगर सिद्व हुआ।''(कालिया, 2012 पृ0147) इतना ही नही अमरकांत ने अपनी मनोदशा का भी वर्णन बहुत ही स्पष्ट ढंग से किया है, जब कोई साहित्यकार लेखनी पकड़ता है तो उसे किन–किन समस्याओं के साथ जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है, इस कथ्य से वह और स्पष्ट हो जायेगा, '' बहुत सी परम्पराओं से हम अपनी रचनाओं के द्वारा अपने को जोड़ते है। बहुत सी बातों को हम नकारते है, किन्तु व्यक्तिगत आक्रोश हावी नही होना चाहिए, वरना सेंटीमेंटालिटी का खतरा उत्पन्न हो जाता है। जीवन तर्क की उपेक्षा करके भावुकता के निष्कर्षो तक पहुँचने की जल्दबाजी रचना की गंभीरता को नष्ट करती है। रचना को संवेदना में उतारना है और उपकरण है जिंदगी। जिंदगी अन्तर्विरोधों से भरी है। हमें इसी अंतर्विरोधों से भरी जिंदगी की जमीन पर रचना को खड़ा करना होता है। हम हवा में कोई कार्य नही कर सकते। लेखक को जिंदगी के अंतर्विरोधों का जायजा लेना ही पड़ता है।''(वही,पृ0204) यहाँ पर कहानीकार की आत्माभिव्यक्ति यह संकेत देती है कि नवीनता को स्वीकार करने की सनक में पुरातनता को एक झटके में छोड़ा भी नही जा सकता। अमरकांत की कहानियों में स्वतंत्र भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार आदि को समस्या के रूप में वर्णित किया गया है। अमरकांत का मोह त्याग भी भारत की विभिन्न व्यवस्थाओं में देखने को मिलता है। यहाँ पर मोहन सिंह का कथन उल्लेखनीय है,'' आज की प्रत्येक कहानी सम्बन्धों से शुरू होती है और समाप्त होती है एक अर्थहीनता की अनुभूति पर। एक व्यापक अर्थहीनता जो किसी कुंठा या निराशा की परिणति नही है केवल एक मोहभंग की तर्क–संगत परिणति है।''(धनंन्जय, 1970,पृ0130) सही अर्थो में देखा जाय तो अमरकांत राजनीतिक विडम्वनाओं को आम जन मानस तक होने वाले मानसिक उद्वेलन को अपनी कहानियों में बाधने में सफल सिद्व हुए हैं।

'बस्ती' कहानी में नेताओं के छल–प्रपंच वाली बातो में आत्मानंद अपने को ठगा सा महसूस करता है जब यथार्थ उसके सामने प्रत्यक्ष होता है तो उसका मन खिन्न हो जाता है,'' उसके दिल के असंख्य टुकडे कर दिए गए हो। क्या दुनिया ऐसी है ? क्या विश्वास का यही फल मिलता है ? कितना बेवकूफ बनाया गया है।''(अमरकांत,1997 पृ034) इस पीड़ा ने आज हमारे आम जन मानस को हरेक स्तर पर छला है। चुनावी वादे जनता से करने के बाद नेता को कुर्सी प्राप्त होते ही वह सारे वादे भूल जाता है जिस जनता ने उसे इस काबिल बनाया वह उसी का तिरस्कार करने लगता है। यही आज की राजनैतिक संवेदना का नंगा सच है। कथाकार के शब्दो में '' उम्मीद यह थी कि आजादी मिलने पर करोड़ो लोगों के भाग्य का परिवर्तन होगा और देश को पुराना बैभव प्राप्त होगा। लेकिन आजादी के बाद राजनीति पीछे मुड़कर उलटी चाल से सकीर्ण स्वार्थ और

1: Corresponding Author

अवसरवाद के रास्ते पर तेजी से भागने लगी।''(कंमार, 2018,पृ010) इतना ही नही आजादी के पश्चात् स्थितियाँ –परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही थी। उस परिवेश का सही ढंग से आकलन कर पाना इतना आसान नही था,'' पचास के दशक में जो परिवर्तन घटित हो रहे थे, उसके एक नयी रचना शीलता को जन्म दिया। भारत बदल रहा था, सम्भावनाएँ अनंत थी और उन सम्भावनाओं के साथ एक संशय भी विद्यमान था।''(वही) आजादी के पश्चात् यह तो तय है कि जिन सपनो को लेकर हम आगे बढ़े थे वह सब कुछ देर मे चकनाचूर हो गये। 'कम्युनिस्ट' कहानी अमरकांत की पहली कहानी क्यों है ? सम्भवतः यह हिन्दी की पहली कहानी है स्वतंत्र भारत में जिसमें कल्याणकारी राज्य (वलफेयर स्टेट) की बात की गयी है। आजादी मिलने से सामन्ती सोच नही बदली। इस कहानी में सामंती सोच और मानसिकता का चित्र है।''(वही) इसी कहानी में भारतीय समाज में व्याप्त आपसी प्रेम भी दर्शनीय है, ''दूर–दूर तक यह बात प्रसिद्ध थी कि बिशुनपुर की जनता एकदम सुखी है क्योकि वहां के ठाकुर देशभक्त तथा जनता के शुभ चिंतक है। वहाँ के ठाकुरों और किसानों में प्रेम है और उनमें संघर्ष नही होता।''(वही) अमरकांत समाजवाद की स्थापना तो चाहते है किन्तु उसका कलेवर भारतीय हो। अमरकांत की हत्यारे कहानी में भी राजनैतिक बिम्व बहुत ही गहरे है। '' तुम गदहे हो साले। जब मैं प्रधानमंत्री बनूगाँ तो तुमको सेक्रेटेरियट का भंगी बनाऊगाँ। बेटे, यह है चन्द्रा सिन्हा। एम0ए0 इंग्लिश से टाप करके अब रिसर्च कर रही है। वह मुझको अपना पति मान चुकी है।'' इस प्रकार की राजनैतिक संवेदना जिसमें खुद व खुद सामाजिक संवेदना झलक रही है, ऐसा अमरकांत जैसे कहानीकार द्वारा ही सम्भव है। समाज की राजनैतिक संवेदना वस्तुगत कुछ ऐसी ही है। जिन शब्दो का प्रयोग कहानीकार ने इस कहानी में किया है उसका अभिप्राय सार्थकता को प्राप्त कर गया है राजनैतिक लोग इतने भ्रष्ट हो गये है कि आम आदमी अपने तन को बेचकर अपनी क्षुधा की तृप्ति कर रहा है यह एक अत्यन्त सोचनीय विषय है। जिन लोगो के ऊपर हमने देश की जिम्मेदारी सौपी थी, वो सब हमारी आकांक्षाओं पर खरे नही उतरे हमारा समाज समस्याओं से ग्रस्त समाज के रूप में दिखाई देता है। उसका सारा का सारा जिम्मा इस देश की राजनैतिक व्यवस्था को जाता है।' डिप्टी कलेक्टरी' कहानी या 'इण्टरव्यू' कहानी हो यहाँ पर बेरोजगारी की समस्या नवयुवकों की सबसे बड़ी समस्या के रूप में कहानीकार ने स्पष्ट रूप से लिखने में किसी भी प्रकार का संकोच नही दिखाया है, '' परन्तु इस श्रेणी में सबसे अधिक संख्या बेकारों की थी। उनको चन्द महीनो या सालों से नौकरी नही मिल रही थी। वे बिना सिफारिश योग्यता तथा स्वास्थ्य के दिन भर या तो लू या पानी या कड़ाके की सर्दी में छोटे–छोटे प्रेसो, प्राइवेट दफ्तरो, मिलों तथ फैक्ट्रियो के चक्कर लगाया करते और सभी जगहो से कुत्तों की तरह दुर दुराये जाते।'' इतना ही नही बेरोजगारी की समस्या के साथ ही साथ भ्रष्टाचार का भी पुट इस कहानी में सहजता के साथ देखने को मिल जायेगा,''क्या पढ़ते हो यार। मुझे मालूम है, चुना जाने वाला पहले ही चुन लिया गया है। इंटरब्यू तो ढोंग है.....किसी ने कहा '' इण्टरब्यू के लिए उन्ही को बुलाया जा रहा है जिनको बुलाने का निश्चय पहले ही से निश्चय कर लिया गया था।'' ''दोपहर का भोजन' कहानी मे बेरोजगारी की समस्या ज्वलंत रूप में है किन्तु उनका परिवार आपसी समझ से भूखमरी की समस्या से निजात पाने के लिए संघर्ष करता है। 'रजुआ' हो या फिर मूस सब के सब हालात के मारे है राजनैतिक तंत्र अपने दायित्वो को निभाने में विफल है। अमरकांत ने कहानी कला का बहुत ही सटीक प्रयोग इन कहानियों में किया है। इतनी मार्मिक अभिव्यक्ति की पाठक का मन स्वतः ही रूदन करने लगता है। '' रजुआ द्वारा लगाये जाने वाला नारा है इन खिलाफ जिन्दाबाद, महात्मा गाँधी की जै।'' ये दो नारे रजुआ क्यों लगाता है ? भगत सिंह और उनके साथियो ने, क्रान्तिकारियों ने 'इन्कलाब जिन्दाबाद ' का नारा लगाया गया है। 'जिन्दगी और जोंक' कहानी में रजुआ रज्जू भगत बनने के बाद भी 'गान्ही महात्मा' की बात करता है। उनके बारे में बढ़ा–चढ़ाकर बोलता है। कहानी में महात्मा गाँधी का उल्लेख अकारण नही।'' रजुआ के माध्यम से कहानीकार की राजनैतिक आस्था का एहसास भी पाठको को होता चलता है। समाजवाद के साथ ही साथ अमरकांत की पूरी आस्था महात्मा गाँधी और भगत सिंह में भी है। अमरकांत जहाँ एक तरफ भगत सिंह की बात करते है तो वही दूसरी तरफ वे महात्मा गाँधी की भी चर्चा करते है। इससे यह तो स्पष्ट है कि अमरकांत का समाजवाद, वर्ग संघर्ष का हिमायती कार्ल मार्क्स के समाजवाद से पूरी तरह से न सही अलग है, उनकी पूरी आस्था प्रजातांत्रिक व्यवस्था के सफल संचालन में है, यही कारण है कि अमरकांत अपनी सम्पूर्ण कहानियो में कही भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था के खिलाफ खड़े नही दिखाई देते।

निष्कर्ष

अमरकांत की राजनैतिक संवेदना स्वातंत्र्योत्तर भारत की विभिन्न राजनैतिक विडम्वनाओं को केन्द्र में रखकर उस पर चितंन की विकास यात्रा है, जिसे अमरकांत जैसे कुशल शिल्पी ने अपनी कहानियों मे उकेरा है। अमरकांत ने अपनी कहानियो के माध्यम से राजनैतिक उतार –चढ़ाव व तात्तकालिक समाज को ध्यान में रखकर जिस भी प्रसंग को अपनी कहानियो में स्थान दिया है वह अपने आप में जीवंत हो उठा है, यही अमरकांत की कहानियो का वैशिष्ट्य है जो पाठको को अपने आप में बाँध लेता हैः।

REFERENCES

धंनजय (1970). *समकालीन कहानीः दिशा और दृष्टि.* इलाहाबादः अभिव्यक्ति प्रकाशन

कालिया, रविन्द्र (संम्पादक) (2012). *अमरकांत एक मूल्यांकन.* नई दिल्लीः सामयिक बुक्स प्रकाशन

कुमार, राजेन्द्र (फरवरी 2018). *समकालीन चुनौती* (पत्रिका) समस्तीपुर : स्वामी प्रकाशक.

अमरकांत (1997). *मित्र मिलन तथा अन्य कहानियाँ.* इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन

अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खण्ड 2013). नई दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ.